हिन्दी

अध्याय-12: कंचा

SHIVOM CLASSES 8696608541

-टी० पद्मनाभन

सारांश

लेखक ने कंचा कहानी में बच्चों की कल्पना को बहुत अच्छे ढ़ंग से उतारा है। बच्चों को जीवन की वास्तविकता से कोई सरोकार नहीं होता। वह अपनी दुनिया में रहते हैं। लेखक इस कहानी के माध्यम से उनके बालमन को दिखाने में सफल हुए हैं।

कहानी का सार कुछ इस प्रकार है-

कहानी में अप्पू नाम का बालक है जिसे कंचों से बहुत अधिक प्यार होता है।

अप्पू बस्ता लटकाए सियार और कौए की कहानी याद करते-करते विद्यालय जा रहा होता है।

चलते-चलते वह एक दुकान के सामने पहुँचता है तो वहाँ एक जार में रखे हरी लकीर वाले सफेद कंचे, आँवले जैसे कंचे उसे अपनी और आकर्षित कर लेते हैं। वह कंचों की दुनिया में खो जाता है। उसे लगता है जिसे जार आसमान से भी बड़ा हो गया है। वह उसके अंदर चला जाता है। वहाँ पर कोई दूसरा बच्चा न होने के बावजूद उसे मजा आ रहा था। वैसे भी जब से उसकी छोटी बहन की मृत्यु हुई थी उसे अकेले खेलने की आदत से हो गई थी। वह कंचों से खेल ही रहा था कि तो दुकानदार की डाँट से उसकी तन्द्रा भंग हुई। दुकानदार ने उसे पूछा कि क्या उसे कंचे चाहिए पर अप्पू ने ना में सिर हिला दिया।

उसी समय घंटी बजने की आवाज आई और अप्पू अपने विद्यालय की और दौड़ पड़ा। विद्यालय में देर से पहुँचने वाले बच्चों को पीछे बैठना पड़ता था इसलिए आज अप्पू भी पीछे बैठा। अप्पू ने देखा सभी अपने जगह बैठे हुए थे। अप्पू अपने मित्र जॉर्ज को खोजने लगा क्योंकि कंचों का सबसे अच्छा खिलाड़ी था। अप्पू को याद आता है कि जॉर्ज को तो बुखार है। अप्पू का ध्यान कक्षा में नहीं था। मास्टरजी के आते ही उसने हड़बड़ी में पुस्तक खोल दी। मास्टरजी रेलगाड़ी के बारे में पढ़ा रहे थे। परन्तु अप्पू का ध्यान पढ़ाई की बजाय कंचों पर ही लगा हुआ था। मास्टरजी को पता चल गया कि अप्पू का ध्यान पढ़ाई में नहीं है इसलिए जब उन्होंने उससे सवाल पूछा तो अप्पू जवाब नहीं दे पाया। मास्टरजी ने सजा के रूप में उसे बेंच पर खड़ा कर दिया। सभी बच्चे अप्पू की हँसी उड़ाने लगे। बेंच पर खड़ा होकर भी अप्पू कंचों

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

के बारे में और जॉर्ज के बारे में ही सोच रहा था कि जब जॉर्ज आएगा तो वह उसके साथ खेलेगा और दुकान में भी उसे ले जाएगा।

मास्टरजी अपनी क्लास समाप्त करके बच्चों को फीस भरने के लिए कहकर चले गए। बच्चे भी अपनी फीस भरने के लिए क्लर्क के पास चले गए। अप्पू भी फीस भरने के लिए पहुँचा परन्तु वह अभी भी कंचों के बारे में सोच रहा था। सभी बच्चे फीस भर कर अपनी कक्षा में पहुँच गए।

शाम को अप्पू इधर-उधर घूमता रहा। मोड़ पर उसी दुकान पर पहुँचकर शीशे के जार में रखे कंचों को देखने लगा। उसने अपने फीस के एक रूपया पचास पैसे से कंचे खरीद लिए। अप्पू अब इन कंचों को लेकर घर लौट रहा था तब उसने जैसे ही कंचों को देखने के लिए कागज पुड़िया को खोला वैसे ही सारे कंचे रास्ते पर बिखर गए। अप्पू का सारा ध्यान अब अपने बिखरे हुए कंचों को समेटने में लग गया। कंचों को समेटने के लिए वह अपने बस्ते से किताबें बाहर निकाल कर उसमें कंचें भरने लगा। तभी वहाँ पर एक गाड़ी आकर रुकती है। ड्राइवर को अप्पू पर बड़ा गुस्सा आता है पर अप्पू को को मुस्कुराता देखकर उसका गुस्सा गायब हो जाता है और वह चुपचाप निकल जाता है। अप्पू घर पहुँचकर कंचे अपनी माँ को दिखाता है। इतने सारे कंचे देखकेर माँ भी हैरान हो जाती है। अप्पू माँ को बताता है कि फीस के पैसे से उसने सारे कंचे खरीदे हैं। माँ उससे पूछती है वह खेलेगा किसके साथ और अपनी छोटी बेटी की याद में उसकी पलकें भीग उठती है। अप्पू अपने माँ के रोने की बात नहीं समझ पाता। अप्पू अपनी माँ से पूछता है कि उन्हें कंचे अच्छे नहीं लगे। माँ भी अप्पू की भावना को समझ जाती है और हँसकर अप्पू से कहती है कंचे बहुत ही अच्छे हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

कहानी से प्रश्न (पृष्ठ संख्या 97)

प्रश्न 1 कंचे जब जार से निकलकर अप्पू के मन की कल्पना में समा जाते हैं, तब क्या होता है?

उत्तर- कंचे जब जार से निकलकर अप्पू के मन की कल्पना में समा जाते हैं, तब उसे जार और कंचों के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता। दुकान में रखा कंचों से भरा जार उसे ऐसा प्रतीत होता है जैसे जार आकाश से भी बड़ा हो गया। वह उसके अंदर चला जाता है। वहाँ उसे कोई बच्चा दिखाई नहीं देता। फिर भी वह बहुत खुश है क्योंकि उसे अकेले खेलने की आदत है। वह वहाँ अपने चारों ओर कंचे बिखेरकर मजे से खेलने लगा। हरी लकीर वाले सफेद गोल कंचे इस तरह उसके दिमाग पर छा गए कि कक्षा में भी वह पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे सका। इस कारण उसे सजा भी मिली।

प्रश्न 2 दुकानदार और ड्राइवर के सामने अप्पू की क्या स्थिति है? वे दोनों उसको देखकर पहले परेशान होते हैं, फिर हँसते हैं। कारण बताइए।

उत्तर- दुकानदार और ड्राइवर के सामने अप्पू एक निरीह, मासूम-सा बच्चा है। वे दोनों उसकी भावनाओं को बड़ी जल्दी समझ जाते हैं। दुकानदार पहले अप्पू से परेशान था क्योंकि वह उसकी दुकान में खड़ा कंचों को देखे जा रहा था, खरीद नहीं रहा था। उसकी हरकतों से दुकानदार को चिंता हुई कि कहीं वह जार गिराकर तोड़ न डाले। लेकिन स्कूल से लौटते समय अप्पू जब दुबारा उसकी दुकान पर आता है तो दुकानदार हँस पड़ता है। वह समझ जाता है कि अप्पू कंचे खरीदने ही आया है। ड्राइवर अप्पू से परेशान था क्योंकि अप्पू गाड़ियों की परवाह किए बिना सड़क पर बैठकर बिखरे कंचे एकत्र रहा था। कार के हॉर्न की आवाज़ सुनकर जब अप्पू भोलेपन से हँसकर उसे अपने कंचे दिखाता है तो ड्राइवर उसकी मासूमियत देख हँस पड़ता है।

प्रश्न 3 मास्टर जी की आवाज़ अब कम ऊँची थी। वे रेलगाड़ी के बारे में बता रहे थे। मास्टर जी की आवाज़ धीमी क्यों हो गई होगी? लिखिए।

उत्तर- मास्टर जी की आवाज धीमी नहीं हुई थी, अप्पू को वह धीमी लग रही थी क्योंकि उसका ध्यान उनकी बातें से अधिक अपने कंचों पर था। उसके दिलो-दिमाग पर कंचे छाए हुए थे, इसलिए

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मास्टर जी की आवाज से उसका ध्यान हटता जा रहा था। जैसे-जैसे उसका मन कक्षा से हटकर कंचों पर जा रहा था, वैसे-वैसे मास्टर जी की आवाज धीमी प्रतीत होती जा रही थी।

कहानी से आगे प्रश्न (पृष्ठ संख्या 97)

प्रश्न 1 कंचे, गिल्ली-डंडा, गेंदतड़ी (पिट्ठू) जैसे गली-मोहल्लों के कई खेल ऐसे हैं, जो बच्चों में बहुत लोकप्रिय हैं। आपके इलाके में ऐसे कौन-कौन से खेल खेले जाते हैं? उनकी एक सूची बनाइए।

उत्तर- हमारे इलाके में अब क्रिकेट और फुटबॉल ही बच्चों के पसंदीदा खेल बन गए हैं। इसके अतिरिक्त बैडमिंटन, वॉलीबाल, टेनिस आदि भी खेले जाते हैं।

प्रश्न 2 किसी एक खेल को खेले जाने की विधि अपने-अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- क्रिकेट आज कल हमारे देश में सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। इसकी कई विधाएँ प्रचलित हैं जैसे- टेस्ट मैच, एकदिवसीय और ट्वेंटी-ट्वेंटी। क्रिकेट के खेल में दो टीमें होती है और प्रत्येक टीम में ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। एक टीम बल्लेबाजी करती है तो दूसरी गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण। निर्णायक अंपायर कहलाते हैं, जिनका फैसला ही सर्वोपरि होता है। एक दिवसीय मैचों में एक टीम 50 ओवरों की बल्लेबाजी में जितने रन बनाती है, दूसरी टीम अगले पचास ओवरों में उससे अधिक रन बना कर जीतने का प्रयास करती है। इस बीच गेंदबाजी कर रही टीम के खिलाड़ी विपक्षी टीम के बल्लेबाजों को आउट करने का प्रयास करते रहते हैं। आउट हो गए खिलाड़ी को पवेलियन वापस जाना पड़ता है। खेल के एक ओवर में सामान्यतः छः गेंदें फेंकी जाती हैं। बल्लेबाज प्रत्येक गेंद पर रन लेने की कोशिश करता है। इस प्रकार टीम के सभी खिलाड़ी अधिक-से-अधिक रन बनाने का प्रयास करते रहते हैं।

अनुमान और कल्पना प्रश्न (पृष्ठ संख्या 98)

प्रश्न 1 जब मास्टर जी अप्पू से सवाल पूछते हैं तो वह कौन सी दुनिया में खोया हुआ था? क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि आप किसी दिन क्लास में रहते हुए भी क्लास से गायब रहे हो? ऐसा क्यों हुआ और आप पर उस दिन क्या गुज़री? अपने अनुभव लिखिए।

उत्तर- जब मास्टर जी अप्पू से सवाल पूछते हैं तो वह कंचों की दुनिया में खोया हुआ था।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

प्रश्न 2 आप कहानी को क्या शीर्षक देना चाहेंगे?

उत्तर- इस कहानी का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है- 'अप्पू और कंचे'।

प्रश्न 3 गुल्ली-डंडा और क्रिकेट में कुछ समानता है और कुछ अंतर। बताइए, कौन सी समानताएँ हैं और क्या-क्या अंतर हैं?

उत्तर- गुल्ली-डंडा खेल में एक खिलाड़ी गुल्ली फेंकता है और दूसरा डंडे से उसे दूर तक फेंकने का प्रयास करता है। अन्य खिलाड़ी उस गिल्ली को कैच करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। क्रिकेट में भी ऐसा ही होता है। बल्लेबाज द्वारा बल्ले से मारी गई गेंद को कैच करने का प्रयास किया जाता है। गुल्ली डंडा में क्षेत्र और समय की कोई सीमा नहीं होती है। यह प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों में खेला जाता है जबकि क्रिकेट को क्षेत्र मैदान की लंबाई-चौड़ाई और फैंके जाने वाले ओवरों की संख्या को निश्चित कर खेला जाता है, और यह देश-विदेश में खेला जाने वाला एक लोकप्रिय खेल है।

भाषा की बात प्रश्न (पृष्ठ संख्या 98)

प्रश्न 1 नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित मुहावरे किन भावों को प्रकट करते हैं? इन भावों से जुड़े दो-दो मुहावरे बताइए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

- माँ ने दाँतों तले उँगली दबाई
- सारी कक्षा साँस रोके हुए उसी तरफ़ देख रही है।

उत्तर-

- दाँतों तले उँगली दबाना-आश्चर्य करना।

  i. मुँह खुला रह जाना-उसकी हाजिर जवाबी सुनकर मेरा मुँह खुला रह गया।
  ii. हक्का-बक्का होना-अपने दादाजी की मृत्यु का समाचार सुन कर मैं हक्का-बक्का रह गया।

- साँस रोके हुए-भयभीत।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

i. दम साधे हुए-सारे विद्यार्थी दम साधे हुए परीक्षा परिणाम का इंतजार कर रहे थे।
ii. कंठ सूख जाना-अपना झूठ पकड़े जाने के डर से मेरा कंठ सूख गया।

प्रश्न 2 विशेषण कभी-कभी एक से अधिक शब्दों के भी होते हैं। नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित हिस्से क्रमशः रकम और कंचे के बारे में बताते हैं, इसलिए वे विशेषण हैं।

पहले कभी किसी ने इतनी बड़ी रकम से कंचे नहीं खरीदे। बढ़िया सफेद गोल कंचे

- इसी प्रकार के कुछ विशेषण नीचे दिए गए हैं। इनका प्रयोग कर वाक्य बनाएँ।

  ठंडी अँधेरी रात

  खट्टी-मीठी गोलियाँ

  ताजा स्वादिष्ट भोजन

  स्वच्छ रंगीन कपड़े

उत्तर- **ठंडी अँधेरी रात:** उस ठंडी अँधेरी रात में ट्रेन छूट जाने के कारण मुझे बहुत परेशानी उठानी पड़ी।

ताजा स्वादिष्ट भोजन: घर का बना ताजा स्वादिष्ट भोजन खाकर मन तृप्त हो गया।

खट्टी-मीठी गोलियाँ: फेरीवाला बच्चों को खट्टी-मीठी गोलियाँ देता था।

स्वच्छ रंगीन कपड़े: आज हमें स्वच्छ रंगीन कपड़े पहनकर विद्यालय के उत्सव में शामिल होना है।

कुछ करने को प्रश्न (पृष्ठ संख्या 98)

प्रश्न 1 मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' खोजकर पढ़िए। 'ईदगाह' कहानी में हामिद चिमटा खरीदता है और 'कंचा' कहानी में अप्पू कंचे। इन दोनों बच्चों में से किसकी पसंद को आप महत्त्व

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

देना चाहेंगे? हो सकता है, आपके कुछ साथी चिमटा खरीदनेवाले हामिद को पसंद करें और कुछ अप्पू को। अपनी कक्षा में इस विषय पर वाद-विवाद का आयोजन कीजिए।

उत्तर-'ईदगाह' कहानी में हामिद दादी से मिले तीन पैसों से उन्हीं के लिए चिमटा खरीद लेता है। मेले में जब उसके साथी खिलौने खरीद रहे थे, मिठाइयाँ खा रहे थे, तब वह अपने लिए कुछ नहीं लेता। उसे बस यही याद आता है कि रोटी बनाते वक्त दादी के हाथ जल जाते हैं और वह चिमटा खरीद लेता है।

वहीं दूसरी ओर 'कंचों' के प्रति अप्पू का आकर्षण इतना प्रबल है कि वह फीस जमा नहीं करता और उन पैसों से ढेर सारे कंचे खरीद लेता है।

दोनों कहानियों को ध्यान से पढ़कर छात्र कक्षा में वाद-विवाद का आयोजन करें।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)